प्रदेसी राजा का व्याख्यान

बीदासर, 6 मार्च, 2009।

राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने बीदासर के तेरापंथ भवन में प्रदेसी राजा की कहानी का उल्लेख करते हुए आज फरमाया –

'प्रदेशी बोला – मुनिवर! अभी मेरी बात पूरी नहीं हुई। मैंने कोई एक प्रयोग नहीं किया अनेक प्रयोग किये हैं, लंबी कहानी है प्रयोगों की मैं आपको एक प्रयोग और बताऊं। मैं सोचता हूं कि उसका उत्तर देना आपके लिए कठिन होगा। इतना महत्त्वपूर्ण प्रयोग है कि कोई भी आत्मवादी आस्तिक उसका उत्तर दे नहीं सकता। आप भी नहीं दे सके।'

'प्रदेशी को अपने ज्ञान का अहंकार भी हो गया। मैं जो प्रयोग कर रहा हूं। उसका उत्तर कोई दे नहीं सकता। केसी स्वामी बहुत बड़े ज्ञानी थे शांत भाव से सुन रहे थे और कहा कि तुम्हारा क्या प्रयोग है?

प्रदेसी बोला महाराज – 'एक प्रयोग यह था कि मैं राज्यसभा में बैठा था। उस समय कोटपाल एक चोर को लेकर आया मुझे तो प्रयोग करना था, क्रूरता थी मारने में कोई संकोच नहीं था, मैंने उसको लोहे की कुंभी (लोहे का बड़ा पात्र) में डाल दिया। फिर लोहे का ढ़क्कन दे दिया और ऐसा बनाया हुआ था कहीं भी छिद्र नहीं था, एक राई तो क्या एक चिंटी भी भीतर नहीं जा सकती। कुछ दिनों बाद मैंने ढक्कन खोला तो उसमें हजारों जीव बुलबुला रहे थे। मुनिवर बताएं वे जीव इतने कहां से गये आत्मा कहां से आईं। मैं सोचता हूं आपके पास इसका कोई उत्तर नहीं होगा। बाहर से आती तो कोई छेद होता परंतु कहीं कोई छिद्र नहीं हुआ और फिर भी इतने जीव भीतर आ गए। इसलिए आप फिर विचार करें यह शरीर और जीव अलग नहीं है। केसी स्वामी ने सुना और राजा प्रदेसी जब मौन हुआ।

केसी स्वामी बोले – 'प्रदेशी! तुम प्रयोग कर रहे हो, तुमने प्रयोग किये पर तुम्हारे सारे प्रयोग एक स्थूल जगत में चलने वाले प्रयोग हैं। तुमन अभी तक सूक्ष्म के रहस्य को समझने का प्रयत्न नहीं किया। एक प्रकार से बचपन लग रहा है, बचपन जैसा प्रयोग। तुम अभी तक स्थूल जगत की बात कर रहे हो तुम अभी तक सूक्ष्म जगत को नहीं जानते और बहुत मर्म की बात केसी स्वामी ने कही कि जब तक कोई व्यक्ति सूक्ष्म जगत के नियमों को नहीं जानता केवल स्थूल जगत के नियम, स्थूल नियमों के आधार पर कोई बात करता है सार युक्त बात नहीं होती। तुम कहते हो, मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं लो मैं तुम्हें एक बात बताऊं उसका उत्तर दो – 'एक लोहार धोंकनी धोक रहा है। अभी तो लोहा है लोहे को उसमें डाला, धोंकनी शुरू की, धमना शुरू किया और थोड़ी देर में वह लोहा अग्निमय बन गया, बोलो प्रदेशी कोई छेद हुआ क्या।'

बोला – 'महाराज छेद तो नहीं हुआ। तो फिर अग्नि कहां से गई? कैसे गई। 'सोचने लग गया कैसे गई, लोहा सघन था और जब धोंकनी में डाला गया, धमा गया। भात लोह अग्निमय बन गया, बोलो कहां से गई? अब इधर उधर देखने लगा, सोचने लगा कि इसका क्या उत्तर दूं।' बोला – 'महाराज! कठिनाई हो रही है। आप कुछ

ऐसी बात कह देते हैं कि मुझे उत्तर देना सुझता भी नहीं है।' कैसी स्वामी बोले – देखो, तुम अभी नियमों को नहीं जानते, सूक्ष्म जगत के नियमों को नहीं जानते कि जीव बहुत सूक्ष्म है और जीव की गति अप्रतिहत है यानी कहीं स्खलित नहीं होती, चाहे दिवार आ गई, चट्टान आ गई चाहे लोहे का दरवाजा आ गया चाहे वज्रमय दरवाजा आ गया, सूक्ष्म की गति कभी रूकती नहीं है। यह स्थूल परमाणु, स्थूल स्कंधों की गति का नियम अलग होता है और सूक्ष्म का नियम अलग होता है तो यह सूक्ष्म का नियम है कि जीव और जीव के साथ जुड़ा हुआ कर्म शरीर इतना सूक्ष्म है कि वह कहीं से पार जा सकते हैं, कोई अंतर नहीं आता।'

प्रश्न के सामने दूसरा बड़ा प्रश्न आ गया और शायद प्रदेशी का सिर भी ठनक गया कि मैं जिनसे बात कर रहा हूं वह कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं है असाधारण है। क्योंकि आज तक मैंने जिनसे बात की और अपने प्रयोग बताये वे कुछ उत्तर नहीं दे सके। किंतु केसी स्वामी जो प्रतिप्रश्न कर रहे हैं, मेरे प्रश्न के साथ फिर से वे प्रश्न रख रहे हैं मुझे भी पुर्नविचार करना पड़ेगा, ऐसा लगता है कि आज तक जो गहरी परतें जमी हुई थी, अब वे परतें मोती बनने की स्थिति में आ रही है।

'मोती कैसे बनता है? आपने कभी अध्ययन किया हो, सिपी के भीतर चाहे बालू का कण जाए, और चाहे पानी की बूंद जाए सिपी उसे अपना दुश्मन मानती है, विरोधी मानती है इसलिए उस पर कवच चढ़ाना वह प्रतिक्रिया करती है और परत चढ़ानी शुरू कर देती है। वह जो परत चढ़ाती है। वह परत एक बालू के कण पर परत चढ़ती गई, एक दिन जाकर वह मोती बन गया। सिपी की प्रतिक्रिया है किंतु मोती बन जाता है।'

ऐसा लग रहा है कि केसी स्वामी ने भी ऐसी परत चढ़ानी शुरू कर दी कि यह बालू का कण या जल की बूंद एक दिन मोती बन जाएगी। बोला – 'महाराज! आपने जो बात रखी है, एकदम उत्तर देना मेरे लिए कठिन हो गया। मैं आपके प्रश्नों पर चिंतन करूंगा। क्योंकि मैं जो प्रयोग रखता हूं और आपका उसके प्रति जो उत्तर होता है, मैंने आज तक इतने बढ़िया उत्तर और इतना बढ़िया प्रतिवाद कभी सुना नहीं, कभी देखा नहीं। मैंने यह स्थूल और सूक्ष्म इन दोनों नियमों को कभी सोचने का समझने का प्रयत्न भी नहीं किया। आप ठीक कह रहे हैं कि स्थूल जगत के नियम अलग होते हैं और सूक्ष्म जगत के नियम अलग होते हैं।

स्थूल जगत का एक नियम कि कोई चीज भारहीन नहीं होती। प्रत्येक वस्तु में भार होगा चाहे वह बालू का कण लें, चाहे एक छोटा सा कोई भी अंश लें भार सबमें होगा, भारहीन कोई होता नहीं है। यही माना जा रहा था किंतु जब एक वैज्ञानिक ने भारहीन परमाणु की खोज की तो दुनिया को आश्चर्य हुआ कि भारविहीन अणु भी होता है। किंतु जैन तत्व को जानने वाले के लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। पता नहीं हजारों–हजारों वर्ष पहले से जैन आचार्यों ने भारहीन परमाणु की खोज की, भारहीन स्कंधों की खोज कर ली। दो प्रकार के प्रमाणु स्कंध होते हैं चतुस्पर्सी और अष्टस्पर्शी जब तक क्षणिक्त, रूक्स, शीत, ऊष्ण ये चार स्पर्श होते हैं तब तक भार नहीं होता। एक अनंत परमाणुओं का स्कंध है और चतुस्पर्शी है तो वह भारहीन होगा केवल अणु नहीं अणुओं का स्कंध भी भारहीन हो सकता है। जब वह अस्टस्पर्शी बनता है, स्थूल बनता है, सूक्ष्म से स्थूल बनता है। सूक्ष्म जगत इतना विचित्र है जिसकी कोई

स्थूल दृष्टि वाला कल्पना नहीं कर सकता। आज के वैज्ञानिक इसलिए बहुत नई बात खोज रहे हैं कि वे सूक्ष्म नियमों को जानने लगे हैं।

'केसी स्वामी ने सूक्ष्म नियमों को समझे की बात कही तो प्रदेशी का अंतर मन द्वंद्व हो गया, अंतरद्वंद्व पैदा हो गया कि ये सूक्ष्म निमयों की बात कहते हैं और मेरे प्रश्न का उत्तर देते हैं इतना सटीक होता है कि वापस सूझता नहीं इसका प्रतिवाद करूं। फिर भी मुझे हार नहीं माननी है, आग्रह होता है, अब आग्रह के साथ जिज्ञासा और जुड़ गई।'

'प्रदेशी बोला – महाराज आपने जो उत्तर दिया, वह ठीक है मैं उसको स्वीकार कर लेता हूं। फिर भी मेरी बात पूरी नहीं हुई मेरा एक प्रयोग और है, एक प्रयोग और प्रदेसी प्रस्तुत करेगा फिर केसी स्वामी क्या उत्तर होगा?..... (क्रमशः)

शुभ भावों को पुष्ट करने का प्रयास करें

– युवाचार्य श्री महाश्रमण

''एक आदमी को हम शांत रूप में देखते हैं। कुछ समय बाद उसे आक्रोश में भी देखा जा सकता है। एक आदमी को कभी हम नम्रता की प्रतिमूर्ति के रूप में हम देखते है। तो कभी उसमें अहंकार देखने को मिल जाता है एक आदमी के प्रति हमारी धारणा है कि बड़ा ऋजु है, सरल है कभी–कभी वह भी छल–कपट कर सकता है। एक आदमी को हम संतोषी के रूप में देखते हैं तो कभी–कभी उसमें लोभ लालच का भाव भी आ सकता है। आदमी के भीतर एक भावों का संसार है, उसमें शुभ भाव भी हैं और अशुभ भाव भी हैं आदमी के भीतर अहिंसा का संस्कार भी है तो हिंसा का संस्कार भी है, आदमी में अच्छाई का बीज है तो उसमें बुराई का बीज भी है अपेक्षा इस बात की है हम शुभ भावों को पुष्ट करने का प्रयास करें।''

उक्त विचार युवाचार्य श्री महाश्रमण ने तेरापंथ भवन में धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

व्यक्ति अच्छाई के संस्कार को मजबूत बनाने का प्रयास करे और अहिंसा के संस्कार को सुदृढ़ बनाने का प्रयास करे। दुनिया में जितने प्राणी हैं, उनमें सर्व श्रेष्ठ प्राणी मनुष्य है। मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ कहने के पीछे दो आधार हैं, पहला आधार है शास्त्रीय, धर्म शास्त्र।एक मानव की ही ऐसी योनी है जहां से व्यक्ति साधना करके परमात्मा बनकर मोक्ष में जा सकता है और कोई भी दुनिया का प्राणी उस योनी से मोक्ष में नहीं जा सकता। देवता को भी मोक्ष में जाने के लिए मनुष्य बनना होगा सीधे नहीं जा सकते। एक इंसान को ही वह अधिकार प्राप्त है जिसके द्वारा वह मोक्ष में जाता है इसलिए मानव सर्वश्रेष्ठ प्राणी है।

दूसरा आधार यह है कि हमारी दृश्य दुनिया में आदमी के पास जैसा दिमाग है, आदमी के पास जो चिंतन शक्ति है वह अन्यत्र कठिन लग रही है। या सामने स्पष्ट नहीं आ रही है। जो व्यक्ति अपने आत्मीय ज्ञान के द्वारा सूक्ष्म को जान लेते थे। व्यवधान के बाद भी जान लेते। हजारों मील दूर क्या हो रहा है यहां बैठा आदमी अपने अतीन्द्रिय ज्ञान के आधार पर जान लेता था। के पास ऐसा मस्तिष्क है कि वह विकास

कर सकता है। मोक्ष में जाने की अर्हता एकमात्र आदमी में है और यह विकास आदमी के मस्तिष्क की उपज है, इन दो आधारों के आधार पर मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। दिखती दुनिया में अधम प्राणी आदमी ही है एक ओर सर्वश्रेष्ठ प्राणी दूसरी ओर अधम प्राणी है, साधना करे तो आदमी भगवान बन सकता है, हिंसा करे तो शैतान का रूप भी आ जाता है।

युवाचार्य प्रवर ने कहा कि गुस्से को उपशम के अभ्यास से जीतने का प्रयास करना चाहिए और नम्रता के द्वारा अहंकार को विचलित करने का प्रयास करना चाहिए और संतोष की भावना के द्वारा, अनुप्रेक्षा के द्वारा व्यक्ति लोभ को जीतने का प्रयास करे तो उसमें शुभ भाव उजागर हो सकेंगे।

यह पुरुष, यह आत्मा हमारी अनेक चित्तों वाली है विभिन्न भाव उसमें उभरते हैं विभिन्न भाव हैं विरोधी भाव हैं, नकारात्मक भाव है उनको समझे और उनको कमजोर करने का प्रयास करे। परिवारों में, संगठनों में देखें कि जब अशुभ भाव उभरते हैं तो समस्याएं भी पैदा होती है। परिवार जो शांति से रहना वाला उसमें अशांति हो जाती है, कलह हो जाती है जब यह अशुद्ध भाव आदमी के उभर जाते हैं। शांति पाने के लिए और अगले जन्म को अच्छा बनाने के लिए आत्मा का उत्थान करने के लिए भाव जगत को समझते हुए अशुद्ध भावों से बचे रहने का प्रयास करे। शुद्ध और शुभ भावों का विकास करने का अभ्यास करे तो जीवन अच्छा बन सकता है।

इस अवसर पर साध्वी तिलकश्री जी गंगाशहर सेवा केन्द्र से पूज्यवरों के चरणों में उपस्थित होकर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

स्वस्थ परिवार कार्यशाला का आयोजन

बीदासर, 6 मार्च

आज मध्याह्न 2 बजे साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा के सान्निध्य में बीदासर के थान–सुथान में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा 'स्वस्थ परिवार कार्यशाला' का आयोजन किया गया। जिसमें महिला मण्डल प्रभारी साध्वी श्री कल्पलताजी ने 'सुख शांति और समाधि' इन तीन बिंदुओं को परिभाषित किया। जीवन में इनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने प्रश्न उत्तर के माध्यम से परिवार में शांति और समाधि हो इस पर परिचर्चा करवाई। मंगलाचरण जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मण्डल की बहनों द्वारा किया गया।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने परिवार में स्वस्थ वातावरण कैसे बनाएं और जीवन में किन–किन गुणों का समावेश करें इस पर प्रेरणास्पद उद्‌बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ कन्या मण्डल की अध्यक्ष भावना सेखानी ने किया।

– अशोक सियोल
99829 03770